द्वितीय अध्याय

'' 'धरती धन न अपना' उपन्यास का वस्तुपरक विवेचन''

द्वितीय अध्याय

'' 'धरती धन न अपना' उपन्यास का वस्तुपरक विवेचन''

विषय-प्रवेश -

साहित्यिक विधाओं में उपन्यास विधा सबसे सशक्त विधा मानी जाती है। उपन्यास में समाज का समग्र रूप से अंकन किया जाता है। मानव समाज और साहित्य का संबंध अनन्यसाधारण रहा है। अतः रचनाकार औपन्यासिक प्रविधि को ध्यान में रखते हुए कृति की रचना करता है। उपन्यास में कथावस्तु महत्त्वपूर्ण होती है। उपन्यासकार समाज में घटित विभिन्न घटनाओं-वस्तुओं को लेकर कथावस्तु का ताना-बाना बुनता है। हर एक रचना अपने युगीन परिवेश से प्रभावित होती है।

'धरती धन न अपना' उपन्यास में लेखक जगदीशचंद्र ने पंजाब प्रांत के दलित, भूमिहीन मजदूरों के जीवन-संघर्ष का यथार्थ अंकन किया है। पंजाब प्रांत में घोड़ेवाहा ऐसा गाँव है जहाँ पर दलित समाज को निम्न कहकर उच्चवर्गीय शोषण करते हैं। दलित लोगों की सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं राजनीतिक स्थिति को लेकर लेखक जगदीशचंद्र ने प्रस्तुत उपन्यास की कथावस्तु में प्रमुखता दी है। तत्कालिन परिस्थितियों को ध्यान में रखकर विभिन्न पात्रों का चरित्र-चित्रण किया गया है। दलित युवक काली को प्रमुख पात्र के रूप में चित्रित करते हुए दलित समाज की चेतना को उजागर किया है। स्वातंत्र्योत्तर काल में भी हमारे देश में उच्चवर्गीयों द्वारा दलित वर्ग शोषित रहा है। अज्ञान एवं अंधविश्वास में लिप्त दलित समाज जीवन को आधार बनाकर लेखक जगदीशचंद्र ने 'धरती धन न अपना' उपन्यास की कथावस्तु का निर्माण किया है।

2.1 वस्तुपरक विवेचन से तात्पर्य -

उपन्यास विधा में औपन्यासिक प्रविधि के तत्त्वों का स्थान महत्त्वपूर्ण माना है। उपन्यास के तत्त्व प्रारंभ से ही विवादास्पद रहे हैं। किसी रचनाकार ने घटनाक्रम के माध्यम से मनोरंजकता या कौतुहल वृत्ति को विशेष महत्त्व दिया तो किसी ने चरित्र-विशेष

को प्रभावपूर्ण ढंग से चित्रित किया है। किसी ने कथोपकथन तो किसी ने वातावरण विशेष को सजीव रूप में उपस्थित करके पाठक को संवेदनशील बनाया वरन् उसकी सहानुभूति अर्जित करने का प्रयास किया।

उपन्यास के तत्त्वों में कथावस्तु, चरित्र-चित्रण, संवाद या कथोपकथन, वातावरण एवं भाषाशैली, उद्देश्य प्रमुख तत्त्व माने गए हैं। इन छह तत्त्वों में कथावस्तु या विषयवस्तु को महत्त्वपूर्ण माना है। किसी एक रचना की सफलता कथावस्तु पर निर्भर होती है। उपन्यासकार अपने उपन्यास में घटनाक्रम के अनुसार वस्तुपरक विवेचन करता है। कथावस्तु के निर्माण में रचनाकार घटनाओं का यथातथ्य एवं क्रम से विवेचन करता है जिससे कथावस्तु में एकसूत्रता आती है। उपन्यास के वस्तुपरक विवेचन के कारण पाठक रचना की ओर आकर्षित होता है। अतः उपन्यास विधा में कथावस्तु प्राणतत्व मानी गई है। कथावस्तु के बिना रचना की कल्पना भी नहीं की जा सकती। वस्तुपरक विवेचन में प्रधान कथा और गौण कथा यह दो भेद किए जाते हैं। प्रधान कथावस्तु वह है जो उपन्यास के आरंभ से लेकर अंत तक चलती है, उसका संबंध नायक के साथ रहता है। गौण कथाएँ उपन्यास के बीच में आती हैं और बीच में ही समाप्त होती हैं तथा मुख्य कथा के विकास में सहयोग देती हैं।

कथावस्तु का प्रस्तुतिकरण विशिष्ठ शैली में करने से अधिक प्रभावी हो सकती है। ऐतिहासिक उपन्यासों की कथावस्तु वर्णनात्मक, कथात्मक शैली में प्रस्तुत की जाती है। कुछ घटनाएँ वर्तमान जीवन से संबंधित होने के कारण आत्मकथात्मक शैली में होती हैं। अतः स्पष्ट है कि, कथावस्तु विभिन्न शैली में भी प्रस्तुत की जाती है।

2.1.1 वस्तुपरक विवेचन का स्वरूप -

कथावस्तु उपन्यास का प्राणतत्त्व है। अच्छे कथानक का चुनाव ही उपन्यास की आधी सफलता होती है। उपन्यासकार उस मानव समाज की घटनाओं और चरित्रों का चयन करता है, जिसमें वह साँस लेता है, मानसिक रूप से जीवन जीता है। कथावस्तु का चयन कभी-कभी उपन्यासकार की प्रवृत्ति पर भी निर्भर होता है। कथानक जीवन के किसी भी खंड, स्थिति अथवा क्षेत्र से ग्रहण किया जा सकता है। उपन्यासकार को समस्त घटनाओं को इस प्रकार संजोया जाना चाहिए कि घटनाओं को पाठक सरलता से आत्मसात कर ले।

कथानक को अंग्रेजी में 'प्लाट' कहा जाता है। जिस प्रकार भूमि पर 'प्लाट' के बिना महल खड़ा नहीं हो सकता उसी प्रकार उपन्यास रूपी महल को सुंदर, भव्य बनाने के लिए कथानक का स्थान महत्त्वपूर्ण है। इसी वजह से कथानक को 'रीढ़ की हड्डी' की उपमा दी गई है। कथानक उपन्यास के आरंभ से अंत तक चलनेवाली व्यवस्था है। नायक एवं पात्रों का चरित्र स्पष्ट करने का कार्य कथानक करता है। उपन्यास में घटनाएँ और कथावस्तु चाहे किसी भी कोटि की हो उसमें अन्विति होनी चाहिए। कथा तथा उपकथाओं में परस्पर संबंध होना चाहिए।

2.1.2 कथावस्तु का अर्थ -

अंग्रेजी शब्द 'प्लाट' का हिंदी पर्यायी शब्द 'कथानक' या 'कथावस्तु' साहित्यिक पारिभाषिक शब्द है। कथानक 'कथ्' धातु से निर्मित है। जिसका शाब्दिक अर्थ 'कथा का लघुरूप' अथवा 'सारांश' होता है। इसका कथात्मक रूप साहित्य के महाकाव्य, खंडकाव्य, नाटक, उपन्यास, कहानी, लोककथा आदि साहित्य में प्रयुक्त होता है। घटनाओं की श्रृंखला को कथावस्तु कहते हैं। अंग्रेजी 'उपन्यास' की विवेचना में 'पॅटर्न', 'फार्म', 'रिदम्' आदि अनेक शब्द कथावस्तु के लिए प्रचलित हैं, परंतु कथावस्तु सर्वग्रहित और सार्वभौमिक शब्द बन गया है। जो केवल आलोचना का कार्य ही संपादित नहीं करता, बल्कि कहानी से घटनाओं की श्रृंखला और उनके सिद्धांतों को सुसंगठित करता है।

2.1.3 उपन्यास में कथावस्तु का महत्त्व -

प्रारंभिक साहित्य में लोकरंजन को महत्त्व दिया जाता था, परंतु धीरे-धीरे लोकरंजन के साथ-साथ मानव समाज को केंद्र बनाकर साहित्य लिखा जाने लगा। आज मानव समाज में घटित विभिन्न घटनाओं, समस्याओं, वास्तविक यथार्थ को आधार बनाकर कथावस्तु का निर्माण किया जा रहा है।

कथावस्तु के अभाव में किसी एक उपन्यास की रचना संदिग्ध हो सकती है। कथावस्तु उपन्यास रूपी भवन का नींव स्वरूप होता है। अर्थात् कथावस्तु घटनाओं का सामान्य या जटिल ढाँचा है जिसके सहारे उपन्यास की सृष्टि होती है। कथावस्तु के महत्त्व संदर्भ में पदुमलाल बख्शी जी के विचार द्रष्टव्य हैं- ''कथा में मानव-चरित्र का विकास

प्रदर्शित किया जाता है और चूँकि उसका सफल प्रदर्शन ही मुख्य बात है, अतः इस तत्त्व का महत्त्व सर्वोपरि है।''[1] स्पष्ट है कि कथावस्तु से मानव-चरित्र का विकास समझने में हमें मदद होती है।

रचनाकार मानव-समाज की विभिन्न समस्याओं को आधार बनाकर कथावस्तु का निर्माण करता है। समाज के सामने वह नई जीवन-दृष्टि रखता है। डॉ. भगीरथ मिश्र उपन्यास में कथावस्तु की अनिवार्यता सिद्ध करते हुए लिखते हैं- ''यद्यपि आधुनिक काल में कथानक का महत्त्व कम समझा जाता है, पर वह उपन्यास का मूल है। उपन्यास में व्याप्त कुतुहल का तत्त्व कथानक के सहारे ही विकास पाता है। उपन्यास का समग्र रूप कथानक के ढाँचे पर ही विकसित होता है। कथानक का चुनाव और निर्माण उपन्यासकार की प्रमुख विजय है और लेखन के कौशल का संकेत इसमें मिल जाता है।''[2] अतः कहा जा सकता है कि कथावस्तु उपन्यास का प्राणतत्त्व है। साथ ही किसी उपन्यास का महत्त्व केवल इसी बात से नहीं आँका जा सकता कि उसका कथानक कितना विशद या महान है। बल्कि उसका वास्तव तथा सशक्त और प्रखर रूप में ही होना उसकी महत्ता का द्योतक होता है।

2.2 'धरती धन न अपना' उपन्यास का वस्तुपरक विवेचन -

प्रगतिशील रचनाकार जगदीशचंद्र ने 'धरती धन न अपना' उपन्यास में पंजाब प्रांत के दलित समाज-जीवन के यथार्थ को आधार बनाकर कथावस्तु का निर्माण किया है। प्रस्तुत उपन्यास की कथावस्तु व्यापक रूप में पूरे भारतीय दलित समाज का दर्शन कराती है। काली, जीतू, मंगू, बाबे फत्तू, नन्दसिंह, संतसिंह यह दलित समाज का प्रतिनिधित्व करते हैं। हरनामसिंह चौधरी, मुंशी चौधरी तथा छज्जू शाह जैसे पात्र शोषक के रूप में चित्रित हुए हैं। लक्षो, ज्ञानों, जस्सो, प्रीतो, चाची, निहाली जैसी दलित स्त्रियाँ सदियों से उच्चवर्गीयों द्वारा शोषित रही हैं। 'धरती धन न अपना' उपन्यास में काली-ज्ञानों की प्रेम-कहानी विशेष महत्त्व रखती है। कथावस्तु का प्रारंभ काली के गाँव आगमन से और अंत काली के गाँव छोड़कर चले जाने से हुआ है। अतः प्रस्तुत उपन्यास की कथावस्तु अपने-आप में सुसंगठित, मौलिक एवं रोचक लगती है।

---

1. श्री पदुमलाल बख्शी - हिंदी उपन्यास में कथा-शिल्प का विकास, पृष्ठ - 96
2. डॉ. भगीरथ मिश्र - काव्यशास्त्र, पृष्ठ - 83

'धरती धन न अपना' उपन्यास का वस्तुपरक विवेचन एवं अध्ययन निम्न पहलुओं से किया गया है।

2.2.1 काली का गाँव पुनरागमन -

'धरती धन न अपना' उपन्यास का प्रारंभ दलित युवक काली के गाँव आगमन से होता है। छह साल पूर्व रोजगार की अपेक्षा काली अपनी बूढ़ी चाची को छोड़कर शहर गया था। शहर से हताश होकर काली पुनः अपने गाँव घोड़ेवाहा वापस आता है। गाँव में पैर रखते ही काली पुरानी यादों में खो जाता है। ''उसे याद हो आया कि, जब वह गाँव के लिए चला था तो कितना प्रसन्न था और उसने चाहा था कि उड़कर वहाँ पहुँच जाए। और अब वह गाँव के बहुत निकट है, सिर्फ पाँच-सात खेत दूर है तो वह लौट जाना चाहता है। फिर उसे अनायास ही चाची का खयाल आया और उसकी आँखें भर आयी।''[1] स्पष्ट होता है कि गाँव छोड़ने का दुःख काली को हो रहा था। इससे भी ज्यादा उसे अपने चाची की याद आती है। चाची की याद आने पर वह जल्दी-जल्दी घर की ओर चल देता है।

दरवाजे पर खड़े काली को देखकर चाची की आँखों में आँसू बहने लगे। बचपन में माँ-बाप गुजरने पर चाची ने ही काली को पाल-पोसकर बड़ा किया था। चाची ने सबसे पहले सरसों के तेल की दो-दो- बूँदे दहलीज के दोनों ओर टपकाकर काली को घर में आने दिया। चाची को छोड़कर चले जाने का दुःख काली को होता है। काली के गाँव वापस आने पर चाची को लग रहा था कि काली कोई युद्ध ही जीतकर आया है। ''उसकी प्रकाशहीन आँखों के अंधेरे में भी दीखने लगा और वह सोलह साल की मुटियार की तरह फुर्ती से कोठड़ी में घूमने लगी।''[2] इस कथन से चाची की खुशी स्पष्ट होती है। पूरी चमादड़ी में चाची शक्कर बाँटकर काली के गाँव वापस आने की खबर सुनाती है। चमादड़ी की सभी स्त्रियाँ, बच्चे काली को देखने आते हैं। लोगों का प्यार देखकर काली तय करता है कि वह फिर से गाँव छोड़कर नहीं जाएगा।

---

1. जगदीशचंद्र - धरती धन न अपना, पृष्ठ - 9
2. वही, पृष्ठ - 12

2.2.2 चौधरी हरनामसिंह की दहशत -

समाज में दलित लोगों की स्थिति अत्यंत दयनीय थी। उच्चवर्गीय लोग दलितों को अपनी संपत्ति मात्र समझते थे। अपना रोब जताने के लिए उच्चवर्गीय दलितों को गालियाँ देना, बिना वजह पीटते थे। चौधरी हरनामसिंह उच्चवर्गीय मानसिकता का प्रतीक है। जो अपना रोब जताने के लिए चमादड़ी में आकर जीतू तथा संतू चमार को बिना वजह पीटाई करता है। उच्चवर्गीयों के परोपकार के तले दबा दलित समाज इसका विरोध नहीं करता, बल्कि दलित लोग अपना सिर निचा किए चूप-चाप देखते रहते हैं। चौधरीयों द्वारा दलितों पर हो रहे अत्याचार के संदर्भ में लेखक जगदीशचंद्र लिखते हैं- ''चमादड़ी में ऐसी घटना कोई नई बात नहीं थी। ऐसा अक्सर होता रहता था। जब किसी चौधर की फसल चोरी हो जाती, बरबाद कर दी जाती, चमार चौधरी के काम पर न जाता या फिर किसी चौधरी के अंदर जमीन का मलकियत का एहसास जोर पकड़ लेता तो वह अपनी साख बनाने और चौधर मनवाने के लिए इस मुहल्ले में चला आता।''[1] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि उच्चवर्गीय लोग अपनी दहशत फैलाने के लिए दलितों को बिना वजह गालियाँ देते तथा पीटाई करते हैं। आर्थिक विपन्नता में जी रहे दलित अपने ऊपर हो रहे अन्याय-अत्याचार का विरोध नहीं करते।

हरनामसिंह चौधरी की फसल किसी दूसरे के जानवर ने नष्ट की थी। वह काम दलित समाज के लोगों का होगा ऐसा सोचकर चौधरी हरनामसिंह जीतू और संतू की पिटाई करता है। काली देखकर भी कुछ नहीं कर सकता। काली को दुःख होता है उच्चवर्ग की दहशत के नीचे दलित समाज अपना जीवनयापन करता है।

2.2.3 पिता की इच्छापूर्ति में व्यस्त काली -

उच्चवर्गीयों द्वारा शोषित-पीड़ित दलित समाज को गाँव के बाहर बस्ती बनाकर रहना पड़ता है। उनकी परछाई से भी उच्चवर्ग परहेज रहता है। सदियों से उच्चवर्ग पर अवलंबित दलितों को न रहने के लिए जमीन होती है और न ही जोतने के लिए। घोड़ेवाहा गाँव के चमार सवर्णों से थोड़ी दूरी पर अपनी बस्ती बनाकर रहते हैं। चमादड़ी में

---

1. जगदीशचंद्र - धरती धन न अपना, पृष्ठ - 20

किसी भी चमार का पक्का मकान नहीं था। अपना पक्का मकान हो ऐसी काली के पिता की इच्छा थी, परंतु वे असमय चल बसे। शहर से वापस आने पर काली अपने पिता का अधूरा सपना पूरा करना चाहता है।

काली के द्वारा पक्का मकान बनाने की खबर पूरी चमादड़ी तथा गाँव में फैल जाती है। पक्के मकान की आशा मन में संजोए हुए दलित बुजुर्ग बाबे फत्तू काली से कहता है- ''तेरा बाप तो सब अरमान दिल में ही लेकर मर गया था। अगर पल्ले के चार पैसे ठिकाने से खर्च हो जाएँ तो समझो अर्थ आ गए वरना इस पेट के दोजख में तो हर चीज जलकर भस्म हो जाती है।''[1] स्पष्ट है कि पक्का मकान होना दलित लोगों को जीवन की सार्थकता जान पड़ती है। मकान के लिए बुनियाद खुदाई के समय मंगू चमार कठिनाईयाँ पैदा करता है। मिठ्ठी खोदने से लेकर काली को मंगू चमार का विरोध सहना पड़ता है। मंगू और काली के झगड़े में निक्कू चमार जख्मी हो जाता है। इन सब का जिम्मेवार काली को ठहराया जाता है। दलित समाज में मंगू चमार जैसे कई लोग होते हैं जो चौधरीयों की चापलूसी करते हुए जीवन-यापन करते हैं। हरनामसिंह चौधरी काली को चेतावनी देते हुए कहता है- ''जब से तू गाँव में आया है। चमादड़ी में शरारत बहुत बढ़ गई है। पहले यही मुहल्ला था और यही लोग थे। लेकिन इनमें से कोई कान में डालने पर भी नहीं चुभता था। लेकिन जिस दिन से तुने यहाँ कदम रखा है, रोज दंगा-फिसाद होने लगा है। कभी किसी को मारत है और कभी किसी का सिर फोड़ता है।''[2] स्पष्ट है कि दलित समाज उच्चवर्गीयों के खिलाफ आवाज नहीं उठाता था। चुप-चाप चमार अन्याय सह लेते थे। पैसों की कमी के कारण काली मकान का आगेवाला हिस्सा पक्का बनाता है और बाकी घर मिठ्ठी से बनाता है। अपने पिता का सपना अधूरा ही रहा इसका काली को बहुत दुःख है।

2.2.4 मुंशी छज्जूशाह की साहुकारी -

साहुकार, जमींदार, पुलिस आदि से समाज का दलित वर्ग शोषित रहा है। दलितों के अज्ञान का लाभ उठाकर साहुकार, जमींदार ब्याज पर ब्याज लेकर फँसाने के काम

---

1. जगदीशचंद्र - धरती धन न अपना, पृष्ठ - 45
2. वही, पृष्ठ - 84

करते हैं। मुंशी छज्जूशाह की रोजमर्रा के चीजों की दूकान थी। वह लोगों को कर्ज देता था। दलितों की अज्ञानता का लाभ उठाकर ब्याज लेता था। काली का चाचा सिद्धू छज्जूशाह से कर्जा लेता है। पचहत्तर रुपये चुकाने के पश्चात् चाचा की मृत्यु हो जाती है। अतः छज्जूशाह काली से बाकी रुपया वसूलना चाहता है। छज्जूशाह कहता है- ''तुम्हारे चाचा सिद्धू ने बारह साल पहले मकान बनाने के लिए मुझसे एक सौ रुपये उधार लिए थे। उससे ब्याज लेना तो मैंने मुनासिब नहीं समझा था, क्योंकि वह अपना प्रेमी था। उसने असल में से पचहत्तर रुपये ही वापस किए थे और अभी पच्चीस रुपये बाकी थे कि उसे मौत ने आ घेरा। बेचारा बहुत ईमानदार आदमी था।''[1] मुंशी छज्जूशाह पच्चीस रुपयों पर ब्याज के रूप में काली से सोलह रुपये लेता है। स्पष्ट है कि छज्जूशाह दलितों का आर्थिक शोषण करता है।

मुंशी छज्जूशाह दलितों से स्पर्श करना निषिद्ध मानता है। इसके लिए वह अपनी दूकान पर चमारों तथा जातों के लिए अलग-अलग दो हुक्के रखता है। साहूकारी करते समय भी सामनेवाले की हैसियत देखकर ही कर्जा देता था। स्पृश्य-अस्पृश्य भेद का पालन करने में छज्जूशाह सावधानी बरतता है। प्रस्तुत उपन्यास में छज्जूशाह साहूकारी प्रवृत्ति का प्रतीक रूप है।

2.2.5 काली का जख्मी होना -

एक दिन काली गाँव की सैर कर रहा था। तब नदी की ओर से आवाजें सुनकर काली वहाँ पर पहुँचा। नदी के किनारे दलित युवक तथा चौधरियों के लड़के आपस में कबड्डी खेल रहे थे। लालू पहलवान के कहने पर काली अखाड़े में उतर जाता है। अपने बलिष्ठ शरीर के कारण काली मात देता है, परंतु दुर्भाग्य से काली का ध्यान बँट जाने से कबड्डी खेलते समय हरदेव चौधरी पकड़ लेता है। प्रतिशोध की भावना से हरदेव चौधरी काली के कुल्हे पर कुहनी से जोर देता है। जिससे काली को चोट आती है और वह खेल के समय तड़पता रहता है। काली को लगी चोट का पता चाची को लगता है, तो चाची हरदेव चौधरी को गालियाँ देती है। चाची दुःखी हो जाती है। चाची दुःखी आवाज में काली से कहती है- ''तू चौधरियों के लड़कों के साथ कबड्डी क्यों खेलने गया था ? उनका क्या

---

1. जगदीशचंद्र - धरती धन न अपना, पृष्ठ - 39

बिगड़ा ? उसने तो एड़ी मार दी। गरीब की चाहे जान ही चली जाती। चमार घूरकर भी देख ले तो चौधरियों को ताव आ जाता है। आप चाहे चमार को जान से भी मार दे तो कोई पूछनेवाला नहीं। तुम्हारे साथ कई बार माथा मारा है कि उनके साथ न खेला कर।''[1] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि उच्चवर्गीय लोग दलित समाज के लोगों को अपनी संपत्ति मात्र समझते हैं। काली लालू पहलवान की हवेली में इलाज के लिए चला जाता है। लालू पहलवान चौधरी होते हुए भी दलितों से परहेज नहीं करता। बल्कि अपना कर्तव्य मानकर वह काली की मुफ्त में मालिश करता है। चौधरी लालू पहलवान एक ही व्यक्ति है जिसे दलित समाज के प्रति हमदर्दी है।

2.2.6 लालू पहलवान का व्यक्तित्व -

'धरती धन न अपना' उपन्यास में लालू पहलवान ऐसा पात्र है जो चौधरी होते हुए भी दलित समाज के प्रति हमदर्दी रखता है। लेखक जगदीशचंद्र ने लालू पहलवान का व्यक्तित्व उदात्त गुणों से अंकित किया है। काली को चोट लगने पर अपना कर्तव्य समझकर लालू पहलवान इलाज करता है। अपनी पहलवानी के किस्से लालू पहलवान फ्लैशबैक शैली द्वारा काली को बताता है। कुस्ती छोड़ने का बहुत बड़ा दुःख पहलवान को होता है। महताबपुर के अखाड़े में नूरा पहलवान का बोल-बाला था। इस कुस्ती में नूरा पहलवान के साथ लड़ने के लिए कोई पहलवान तैयार नहीं हुआ। आखिर लालू पहलवान को उसके उस्ताद ने कुश्ती लड़ने के लिए खड़ा किया। दोनों में बहुत देर तक कुश्ती चली। परंतु दुर्भाग्यवश लालू पहलवान के नीचे नूरा पहलवान दब जाने से उसकी टाँग टूट गई। टाँग टूटने पर लालू पहलवान पर उसके उस्ताद दुःखी हुए। क्योंकि कुश्ती खेलते वक्त प्रतिशोध नहीं होना चाहिए। अतः लालू पहलवान कुश्ती जीत जाने पर भी हार स्वीकार करता है। तब से लालू पहलवान ने उस्ताद के कहने पर अपनी पहलवानी छोड़ दी थी। कुश्ती देखने के लिए वह कहीं पर भी जाता था, परंतु कुश्ती खेलने नहीं जाता।

लालू पहलवान दिल से एकदम अच्छा था। कोई भी आदमी जख्मी हो जाए तो वह लालू पहलवान के घर आता था। लालू पहलवान के बारे में लेखक जगदीशचंद्र

---

1. जगदीशचंद्र - धरती धन न अपना, पृष्ठ - 121

लिखते हैं- ''कोई गिर जाये, हाथ-पाँव टूट जाये, किसी को मोच आ जाये- सब लालू के पास आते थे। वह भी सौ काम छोड़ पहले जख्मी की ओर ध्यान देता था। वह कहता था कि आदमी को अंगहीन होने से बचाना सबसे बड़ा धर्म है। इसे वह भगवान का काम समझकर सबसे पहले और पूरी लगन से करता था। छोटा हो या बड़ा, जाट हो या चमार, इस मामले में उसके लिए सब बराबर थे।''[1] उक्त अवतरण से स्पष्ट होता है कि लालू पहलवान चौधरी होते हुए भी भेदा-भेद नहीं करता था। चाहे चमार हो या जाट। वह जाति को महत्त्व न देकर अपने कर्तव्य को बड़ा समझता था। काली को कोई काम न मिलने पर लालू पहलवान उसे अपनी हवेली में काम करने के लिए रखता है।

2.2.7 बलात्कारित युवती लक्षो -

उच्चवर्गीयों ने हमेशा से दलित स्त्रियों को अपनी संपत्ति मात्र समझा है। दलित स्त्रियाँ यौन-शोषण से पीड़ित हैं। आर्थिक अभाव के कारण चौधरीयों की हवेलियों में छोटा-मोटा काम करके दलित स्त्रियाँ अपना तथा अपने परिवार का पेट पालती हैं। उच्चवर्गीय लोग दलित स्त्रियों की असहायता का लाभ उठाकर अवैध संबंध बनाते हैं। दलित युवती लक्षो हरनामसिंह चौधरी की हवेली में काम करती हैं। उसके अकेलेपन का लाभ उठाकर चौधरी हरनामसिंह का भतीजा हरदेव चौधरी लक्षो पर बलात्कार करता है। बलात्कारीत लक्षो इसका विरोध नहीं कर पाती। मुहल्ले के लोग भी इसका विरोध नहीं करते। असहायता के कारण लक्षो अपने ऊपर हुआ अत्याचार सह लेती है।

दलित युवती लक्षो के घर में खाने के लाले पड़ गए थे। भूख से तड़पते अपने माँ-बाप तथा छोटे भाईयों के लिए लक्षो को अपनी इज्जत तक गँवानी पड़ती है। चौधरी की हवेली में उसे केवल रूखी-सूखी रोटी दी जाती है। लक्षो जब घर आती है तो उसे पता चलता है कि उसका छोटा भाई अमरू बर्तन बेचकर खाने को लेकर आया है। तथा माँ काली से उधार में आटा ले आयी है। ''यह सुन लक्षो चौंक गई और आटा गूँथती हुई सोचने लगी कि माँ घर से आटा उधार माँगने गई तो आटा ले आयी। अमरू देगचा बेचकर आटा और

---

1. जगदीशचंद्र - धरती धन न अपना, पृष्ठ - 125

गुड़ दोनों ले आया। लेकिन वह अपना सबकुछ लुटाकर भी खाली हाथ वापस आ गई।''[1] उक्त अवतरण से स्पष्ट होता है कि दलित स्त्रियों पर अन्याय-अत्याचार तथा अवैध यौन संबंध रखने में उच्चवर्गीय हिचकिचाते नहीं हैं। दलित युवती लक्षो पर बलात्कार होता है, फिर भी कोई कुछ नहीं कहता। सभी दलित लोग उच्चवर्गीयों के रोब तले दबे हुए हैं। किसी में भी हिम्मत नहीं कि वे इसका विरोध कर सके। दलित समाज में मंगू चमार जैसे युवक होते हैं, जो लक्षो पर बलात्कार करने के लिए हरदेव चौधरी को उकसाते हैं। बलात्कार, अवैध यौन संबंध, अवैध संतान जैसी समस्याएँ दलित समाज में देखी जाती हैं। आर्थिक अभाव की जिंदगी जी रहे दलित लोग इसका विरोध नहीं कर पाते।

2.2.8 दलित युवक मंगू की चापलूसी -

'धरती धन न अपना' उपन्यास में दलित युवक मंगू यह पात्र अपना अलग महत्त्व रखता है। दलित समाज में कुछ लोग ऐसे होते हैं, जो स्वयं दलित होकर भी उच्चवर्गीयों की चापलूसी करते हैं। मंगू चमार उसका प्रतिनिधित्व करता है। मंगू के पिता ने हरनामसिंह चौधरी से पाँच सौ रुपये कर्ज के रूप में लिए थे। पिता द्वारा कर्जा न चुकाने पर मंगू को चौधरी की हवेली में बेगारी उठानी पड़ती है। चौधरीयों की हवेलियों में काम करना मंगू को प्रतिष्ठित लगता है। अतः वह चमादड़ी के लोगों में अपना रोब जताना चाहता है। मंगू चमार की करतूत बताते वक्त जीतू कहता है- ''आप सारा दिन चौधरी की दहलीज चाटता है और यहाँ सब पर रौब गाँठता है। सारे मुहल्ले को गालियाँ देता है। न बड़े की शर्म, न छोटे का लिहाज। प्रीतो की लच्छो को तो दिन-दिहाड़े गली में घेर लेता है।''[2] अतः कहा जा सकता है कि मंगू चमार जैसे लोग दलित समाज पर कलंक हैं। मंगू के उकसाने पर ही हरदेव चौधरी दलित युवती लक्षो पर बलात्कार करता है। इतना ही नहीं दिलसुख चौधरी उसकी बहन ज्ञानों के बारे में अपशब्द कहता है, फिर भी मंगू कुछ नहीं बोलता। ऐसा लगता है कि मंगू चमार जैसे दलित अपना जमीर बेचने में कमी नहीं समझते।

काली के हर काम में कठिनाइयाँ उपस्थित करने तथा चौधरी को भड़काने का कार्य मंगू करता रहता है। मंगू की बहन ज्ञानों काली से प्यार करती है। काली-ज्ञानों की प्रेम

---

1. जगदीशचंद्र - धरती धन न अपना, पृष्ठ - 103
2. वही, पृष्ठ - 33

की बातें गाँव में फैल जाने से मंगू ज्ञानों की पीटाई करता है। अंत में वह अपनी बहन को जहर देने में भी हिचकिचाता नहीं है। हररोज उच्चवर्गीय चौधरी, जमींदारों की चापलूसी करने में मंगू अपनी प्रतिष्ठा मानता है। उम्र बढ़ जाने से उसके साथ कोई लड़की शादी करने के लिए तैयार नहीं होती। प्रस्तुत उपन्यास के अंत में काली के गाँव छोड़कर चले जाने पर मंगू काली का मकान हथियाना चाहता है। "मंगू की भैंस रात को सर्दी में ठिठुरती थी। एक दिन आकाश पर बादल छा गए और हल्की-हल्की बूँदाबाँदी होने लगी। मंगू हाथ में लाठी पकड़े काली की ड्योढ़ी के सामने आ खड़ा हुआ। उसने गाली देते हुए लाठी के सुम से ताला तोड़ दिया और साँकल खोल भैंस की रस्सी कोने में पड़ी चक्की के हत्थे से बाँधकर दरवाजा फिर से बंद कर दिया।"[1] स्पष्ट है कि मंगू के कारण काली को बहुत-सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। अपने ही समाज की युवतियों को मंगू बूरी नजर से देखता था। अतः कहा जा सकता है कि लेखक जगदीशचंद्र ने मंगू चमार के पात्र को 'घर का भेदी, बाहर का चोर' उक्ति के अनुसार चित्रित किया है। मंगू चमार जैसे लोगों के कारण दलित समाज का और भी पतन होता है।

2.2.9 पटवारी तथा मुंशी चौधरी का भ्रष्टाचार -

आधुनिक काल में सामाजिक परिवर्तन के साथ-साथ मानवीय मूल्यों में भी परिवर्तन आया है। पैसा साधन न होकर साध्य बन गया है। हर व्यक्ति भ्रष्टाचार से पैसा कमाना चाहता है। 'धरती धन न अपना' उपन्यास में पटवारी तथा मुंशी चौधरी अज्ञानी दलितों की लूट करते हैं। काली के मकान को लेकर निक्कू चमार के साथ झगड़ा होता है। यह झगड़ा सुलझाने के लिए घड्ड़मसिंह चौधरी पटवारी को बुलाता है। घड्डमसिंह चौधरी को कानून की बातें मालूम हैं। अतः वह काली को डराकर पैसे वसूलना चाहता है। मकान की जमीन नापते समय फीस के रूप में घड्ड़मसिंह चौधरी दो रुपये काली से लेता है। "सब लोगों को पता था कि पटवारी इस काम का एक रुपया लेता है। लेकिन घड्ड़म चौधरी ने दो रुपया कहकर अपना हिस्सा भी पक्का कर लिया था।"[2] स्पष्ट है कि पटवारी, घड्ड़मसिंह

---

1. जगदीशचंद्र - धरती धन न अपना, पृष्ठ - 284
2. वही, पृष्ठ - 87

चौधरी जैसे लोग दलितों के अज्ञान का लाभ अपने स्वार्थ के लिए उठाते हैं। मुंशी चौधरी डाकखाने में काम करता है। लखनऊ से काली को अस्सी रुपयों की मनीआर्डर आती है। जब काली पैसे लेने जाता है तब मुंशी चौधरी वसूल के नाम पर पचहत्तर पैसे लेकर सवा उनासी रुपए काली को देता है। अतः काली थोड़ा-बहुत पढ़ा-लिखा होने से इसका विरोध करता है। भ्रष्टाचार के कारण आम जनता का सबसे अधिक शोषण होता है। आर्थिक विपन्नता एवं अज्ञान के कारण दलित समाज इसका प्रतिरोध नहीं करता है।

2.2.10 नन्दसिंह चमार का धर्म-परिवर्तन -

धर्म व्यक्ति की नीजी बात मानी जाती है। भारतीय संविधान ने धर्मनिरपेक्षता का तत्त्व अपनाते हुए व्यक्ति को धर्म-स्वातंत्र्य दिया है। इसके आधार पर व्यक्ति अपने धर्म का, आचार-विचार तथा प्रथाओं का पालन करता है, परंतु आमतौर पर देखा जाए तो भारत में मुघलों के आगमण से लेकर विभिन्न धर्मों में धर्मांतरण हुए। यह धर्मांतरण की प्रक्रिया हिंदू धर्म में सबसे अधिक दिखाई देती है। अंग्रेजी शासनकाल में भी धर्म-परिवर्तन की प्रक्रिया ने जोर पकड़ा था।

'धरती धन न अपना' उपन्यास में नन्दसिंह चमार हिंदू धर्म के प्रथ-परंपराएँ तथा रूढ़ियों, कर्मकांड से त्रस्त होकर पहले सिख धर्म स्वीकार लेता है। सिख धर्म में प्रतिष्ठा न मिलने पर पादरी के बहकावे में आकर नन्दसिंह ईसाई धर्म स्वीकार लेता है। इतवार के दिन सभी रस्मों-रिवाज से पादरी नन्दसिंह को ईसाई धर्म की दिक्षा देता है। नन्दसिंह के परिवार सहित धर्मांतरण करने पर भी उसकी सामाजिक स्थिति में कोई फर्क नहीं पड़ता। बल्कि पुश्तों से चला आया जूते सिलाने कां व्यवसाय ही वह करता है। डॉ. बिशनदास कहता है- ''धर्म बदलने से नन्दसिंह का क्लास कैरेक्टर नहीं बदलेगा। सब धर्म पाखंड हैं। हर धर्म मजदूर तबके के लिए अफीम है। अफीम काली हो या भूरी, उससे क्या फर्क पड़ता है।''[1] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि धर्म का स्थान एक अफीम की तरह है। समाज में कुछ ऐसे लोग हैं जो लालच दिखाकर तथा डराकर-धमकाकर धर्म-परिवर्तन के लिए दलित समाज को प्रवृत्त करते हैं। नन्दसिंह को चमार कहते हुए चौधरी मुंशी कहता है- ''वाह, वाह... नन्दसिंघा।

---

1. जगदीशचंद्र - धरती धन न अपना, पृष्ठ - 153

तेरे सिर पर अभी सींग तो उगे नहीं... पागला, तो कुछ भी बन जा लेकिन रहेगा चमार का चमार ही।''[1] अतः स्पष्ट है कि नन्दसिंह चमार के धर्म-परिवर्तन को समाज मान्यता नहीं मिलती है। धर्मपरिवर्तन से नन्दसिंह के जीवन में कोई परिवर्तन नहीं होता, परंतु हिंदू धर्म में फैले पाखंड एवं बाह्याडंबर से दलित लोग धर्म-परिवर्तन की ओर आकृष्ठ हो रहे हैं। इस सत्य को हमें भूलना नही चाहिए।

2.2.11 प्रतापी चाची की मृत्यु -

काली पक्का मकान बना रहा है, यह देखकर प्रतापी चाची अपने आप को बहुत ही खुद-नसीब समझती है। पैसों के अभाव में काली मकान की अगली दीवार ही पक्की बनाता है। बाकी सभी दिवारें कच्ची बनाई जाती हैं। एक दिन चाची बिना थके उन दिवारों पर मिठ्ठी का लेप कर रही थी उस वक्त अचानक मूर्च्छित हो पड़ी। दो-तीन दिन ज्यादा काम करने तथा कम खाने की वजह से चाची बीमार हुई थी। काली ने डॉ. बिशनदास को बुलाकर चाची पर इलाज किया, परंतु दिन-ब-दिन चाची की हालत बिगड़ती ही गई। अंत में हताश होकर काली को अंध विश्वास का सहारा लेना पड़ता है। दलित मुहल्ले की स्त्रियाँ ताई निहाली तथा बेबे हुकूमा के आग्रह पर मांत्रिक को जीतू ले आता है। मांत्रिक चाची की बिमारी का कारण काली का नया मकान मानता है। नया मकान बनाए जाने पर पूजा-पाठ किए बिना उसमें रहने से भूत-प्रेत आते हैं। इस प्रकार मांत्रिक चाची की बिमारी का कारण बताता है। चाची पर से हरवेलसिंह पारिया का भूत उतारने के लिए मांत्रिक ने लाल मिर्च को जलाकर उसकी धुआँ चाची के नाक के नीचे रख दी। जिससे चाची को जोर-जोर से खांसी आयी और चाची फिर से मूर्च्छा गई। मांत्रिक के कहने पर चार-पाँच दिन चाची को खाने को कुछ नहीं दिया जाता। इतना सब कुछ करने पर भी चाची की तबीयत में कोई फर्क नहीं आता। काली घबरा जाता है। वह चाची को अस्पताल ले जाना चाहता है। परंतु मुहल्ले की बेबे हुकमा काली को रोकते हुए कहती है- ''काका, उम्र बढ़ी हो तो दवा-दारू के बिना भी जान बच जाती है। लेकिन अंत आ गया हो तो बैध, हकीम, डॉक्टर, दवा-दारू,

---

1. जगदीशचंद्र - धरती धन न अपना, पृष्ठ - 200

संत, पैगंबर कोई कुछ नहीं कर सकते।''[1] अतः काली निराश होकर चाची को अस्पताल ले जाने का इरादा छोड़ देता है। अंत में चाची की मृत्यु हो जाती है।

अंधविश्वास के कारण चाची की मृत्यु हो जाती है। काली चाची को अस्पताल ले जाता तो वह बच जाती। चाची की मृत्यु के पश्चात् काली को बहुत दुःख होता है। वह घर में अकेला ही रह जाता है। चाची की मृत्यु के कारण काली अपना पक्का मकान अधूरा छोड़ देता है। प्रतापी चाची की याद काली को तड़फाती रहती है।

2.2.12 काली के घर चोरी होना -

प्रतापी चाची की मृत्यु के पश्चात् काली अकेला हो जाता है। घर का सारा काम काली को ही करना पड़ता है। यह देखकर पड़ोसन प्रीतो चमारन काली को काम करने से रोकती है और वह खुद काली का घर साफ-सुथरा करती है। चाची के मृत्यु का शोक मनाने के लिए आनेवाले लोगों की व्यवस्था नन्दसिंह चमार के घर की जाती है। नन्दसिंह इसके लिए काली से इन्कार करता है, परंतु पादरी के समझाने पर नन्दसिंह चमार काली के दुःख में सहायता करता है। पादरी काली को दुःख में सहायता कर ईसाई धर्म की दिक्षा देना चाहता है, परंतु पादरी की इच्छा पूर्ण नहीं होती।

क्रियाकर्म के दिन चाची की मौसेरी बहन आती है। काली क्रियाकर्म यथातथ्य पूरा करता है। मौसेरी बहन काली को चाची के धन के बारे में पूछती है। काली कहता है- ''मौसी, चाची क्या छोड़कर मरती। न तो उसके घर में कोई कमानेवाला था और न ही उसके हल चलते थे।''[2] फिर भी काली मौसी को सबकुछ दिखाना चाहता है। ट्रंक उठाकर उसमें रखी चाची की पैसों तथा गहनों की पोटली काली देखता है, परंतु उसमें कुछ भी नहीं होता। पोटली की चोरी हो जाती है। ट्रंक में से पोटली के चोरी हो जाने की खबर पूरे मुहल्ले में फैल जाती है। चाची का सबकुछ धन चोरी हो जाने पर काली दुःखी हो जाता है। बड़ी मेहनत से चाची ने काली के ब्याह के लिए धन इकठ्ठा किया था, परंतु वह भी चोरी हो जाता है। अतः काली अपना जीवनयापन के लिए लालू पहलवान के यहाँ खेती में काम करने के लिए जाता है।

---

1. जगदीशचंद्र - धरती धन न अपना, पृष्ठ - 183
2. वही, पृष्ठ- 194

2.2.13 बाढ़ से पीड़ित दलित -

'धरती धन न अपना' उपन्यास में लेखक जगदीशचंद्र ने बाढ़ से पीड़ित दलितों का यथार्थ अंकन किया है। घोड़ेवाहा गाँव में बाढ़ आने से सभी लोग डर जाते हैं। सभी बाढ़ को रोकने का प्रयास करते हैं। बाढ़ को रोकने के लिए एक बकरी की बलि दी जाती है। उसके लिए नदी के बहाव में बकरी काटकर फेंक दी जाती है। फिर भी बाढ़ नहीं रूकती। तीन दिन तक बाढ़ का पानी बढ़ने के कारण चमारों को पीने के पानी की समस्या निर्माण होती है। चमादड़ी की स्त्रियाँ पादरी के घर पानी भरने जाती हैं, परंतु वहाँ पर पादरानी पानी भरने से इन्कार करती है। अंत में सभी स्त्रियाँ पंडित संतराम से मंदिर के कुएँ से पानी देने के लिए बिनती करती हैं। पंडित संतराम छुआ-छूत का कड़ाई से पालन करता है। वह सभी दलित स्त्रियों को वहाँ से भगा देता है। निराश होकर दलित स्त्रियाँ परनालों से टपकती बारिश की धाराओं का पानी पीने के लिए ले जाती हैं।

चमारों की बस्ती समतल में स्थित होने से बाढ़ का पानी चमादड़ी को घेर लेता है। अपने घर को पानी में ढहते देखकर बाबे फत्तू चौधरीयों से अपने घर को बचाने की बिनती करता है, परंतु चौधरी लोग सिर्फ देखते रहते हैं। इतने में एक बड़ा-सा पेड़ पानी के बहाव में गिर जाता है। जिससे पानी चमादड़ी से चौधरीयों की हवेलियों में जाता है। चौधरी सोच में पड़ गए कि बाढ़ कैसे रोकी जा सकेगी ? अंत में काली और हरदेव चौधरी को नदी का बाँध काटने के लिए भेज दिया जाता है। काली और हरदेव दोनों अपनी जान की पर्वा न करते हुए बाँध काटने में सफल होते हैं। धीरे-धीरे बाढ़ का पानी कम होने लगता है। बाँध काटने से सीधे बाढ़ का पानी चौधरीयों की फलसल में से चला जाता है। बाढ़ में सबसे ज्यादा नुकसान चौधरीयों का ही होता है। फसल नष्ठ होने के कारण दोन-तीन दिन तक चमारों को कोई काम न था। वे कूएँ में से गंदा पानी निकालने में व्यस्त थे। लेखक जगदीशचंद्र लिखते हैं- ''मुहल्ले के सब मर्द कुएँ से चो का गदला पानी निकालने में व्यस्त थे। छह मर्द एक साथ शर्त बाँधकर बालड़ियाँ खींच रहे थे। जब वे थक जाते तो उनका स्थान ताजादम युवक ले लेते। पानी का गंदलापन धीरे-धीरे कम हो रहा था। तेज और तीखी धूप नंगे शरीरों में सूइयाँ-सी चुभी रही थी और पसीने की नदियाँ फूट रहीं थी, परंतु वे

इस तरह काम में जुटे हुए थे जैसे कुएँ का पेंदा नंगा करके ही दम लेंगे।''[1] स्पष्ट है कि सभी दलित अपना-अपना मुहल्ला साफ करने में जूट जाते हैं। इस प्रकार बाढ़ का प्रकोप पूरे घोड़ेवाहा गाँव पर पड़ता है।

2.2.14 चमारों द्वारा बायकाट करना -

बाढ़ को रोकने के लिए नदी का बाँध काटने से पानी चौधरीयों की फसल से गुजरता है। बाढ़ रूकने पर चौधरी फसल बचाने के लिए तथा बाँध को भरने के लिए चमारों को काम देते हैं। तीन दिन तक पूरी चमादड़ी बाँध को मिट्टी से भरने का काम करती है। तीन दिन तक काम करने के बावजूद भी चमारों को उनका दाम नहीं दिया जाता। अपने पैसों के लिए चमार लोग काली के नेतृत्व में काम करने से इन्कार करते हैं। काली चौधरीयों से कहता है कि ''मैं बिना पैसे के काम नहीं करूँगा।''[2] काली के इन्कार पर चौधरी क्रोध में आ जाते हैं और चमारों के साथ बायकाट घोषित करते हैं। दूसरे दिन सभी चमादड़ी की स्त्रियाँ तथा पुरुष चौधरीयों के यहाँ काम के लिए जाते हैं तो उन्हें भगा दिया जाता है। अतः दलित लोग भी काली के नेतृत्व में बायकाट का जवाब बायकाट से देते हैं।

बायकाट मे चौधरी तथा चमारों की स्थिति अत्यंत दयनीय होती है। चमार काम पर न आने से चौधरीयों को अपना काम स्वयं करना पड़ता था। चमारों के घरों में अन्न-पानी की समस्या निर्माण हुई। फिर भी काली के हौसले से पूरी चमादड़ी अपने हक के लिए डटकर खड़ी थी। अन्न की समस्या सुलझाने के लिए काली गाँव के लालू पहलवान तथा डॉ. बिशनदास से मदद माँगता है। पादरी काली से कहता है- ''अनाज की तो बेरियाँ भिजवा दूँ लेकिन सवाल है रिश्ते का। अगर चमार ईसाई बिरादरी में शामिल हो गए होते तो हमारा मिशन इन पर फाकों की कभी नौबत न आने देता। हम बंदे को बंदे का राजक नहीं मानते। लेकिन हमारी भी मजबूरी है। मैं किस रिश्ते से तुम्हारे मुहल्लेवालों की मदद करूँ।''[3] स्पष्ट होता है कि समाज में हर एक व्यक्ति अपना स्वार्थ ही देखता है। पादरी

---

1. जगदीशचंद्र - धरती धन न अपना, पृष्ठ - 225
2. वही, पृष्ठ - 235
3. वही, पृष्ठ - 257

अपने धर्म का प्रचार करना चाहता है। किसी के भी मदद न करने पर काली निराश हो जाता है।

दो-तीन दिन तक बायकाट से तंग आकर चौधरी चमारों की बात मानते हैं। चमारों के काम के दाम देने के लिए चौधरी तैयार हो जाने से बायकाट की समाप्ति की जाती है। दलितों के बायकाट का अंकन करते हुए लेखक जगदीशचंद्र ने उच्चवर्गीय मानसिकता को धक्का दिया है। आज दलित समाज संघठित हो रहा है। संघटित दलित अपने अधिकारों को प्राप्त कर रहे हैं। दलित समाज धीरे-धीरे शिक्षा ग्रहण कर रहा है। शिक्षित दलित अन्याय के खिलाफ आवाज उठा रहे हैं। सदियों से दबा-कुचला दलित आज अन्याय-अत्याचार का विरोध कर रहा है। यह एक प्रकार से दलित क्रांति मानी जाएगी।

2.2.15 डॉ. बिशनदास की संकुचित दृष्टि -

'धरती धन न अपना' उपन्यास में डॉ. बिशनदास यह पात्र संकुचित एवं स्वार्थी दिखाई देता है। मार्क्सवादी विचारों से प्रेरित डॉ. बिशनदास दलित समाज के लोगों में राजनीतिक चेतना जगाने का प्रयास करता है, परंतु उसमें भी अपना स्वार्थ ही देखता है। डॉ. बिशनदास के बारे में लेखक जगदीशचंद्र लिखते हैं- "बिशनदास स्वयं जालंधर के एक कालेज में पढ़ता था। छुट्टियों में जब कभी वह गाँव आता तो शाम को वह काली को चो में ले जाता और रात गए तक कई बातें समझाया करता- इन्कलाब की बातें, मजदूरों के संघर्ष की बातें। वे सब बातें उसकी समझ से बाहर होती थीं लेकिन उसपर इतना प्रभाव पड़ा था कि उसने चौधरियों के लड़कों की गालियाँ सुनने से इन्कार कर दिया था और दो-चार बार झगड़ा हो जाने पर हाथापाई भी की थी।"[1] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि डॉ. बिशनदास पर मार्क्स के विचारों का प्रभाव था। डॉ. बिशनदास काली के साथ मार्क्स के विचार तथा विभिन्न राष्ट्रों में हुई राज्यक्रांतियों की चर्चा करता है।

शोषक-शोषित के खिलाफ आवाज उठाने का प्रयास डॉ. बिशनदास करता है। हिंदू धर्म में फैले कर्मकाण्ड से त्रस्त नन्दसिंह चमार ईसाई धर्म की दिक्षा लेता है। धर्म के

---

1. जगदीशचंद्र - धरती धन न अपना, पृष्ठ - 111

विरोध में दलितों के रवैये पर डॉ. बिशनदास महाशय तीरथरामजी से कहता है- ''महाशयजी, इन्कलाब को न तुम रोक सकते हो और न ही पादरीजी। इन्कलाब तो बफरे हुए तूफान की तरह है जो धर्म के कच्चे किनारों को तोड़कर चारों ओर फैल जाएगा।''[1] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि आज समाज में धर्म-जाति के बंधन कम हुए हैं। व्यक्ति अपनी इच्छा से दूसरा धर्म स्वीकार करता है। डॉ. बिशनदास दलित समाज में हो रही क्रांती को आगे बढ़ाना चाहता है, परंतु उसकी संकुचित एवं स्वार्थी दृष्टि के कारण बिशनदास उपेक्षित रहता है। दलितों का साथ देने से गाँव के चौधरी डॉ. बिशनदास पर दबाव डालते हैं। तो दूसरी ओर बायकाट के समय दलितों का साथ न देने से दलित समाज के लोग डॉ. बिशनदास पर विश्वास नहीं रखते हैं। बायकाट के समय काली के मदद माँगने के लिए जाने पर डॉ. बिशनदास केवल मार्क्सवाद तथा वर्ग-संघर्ष के बारे में बड़ा-सा भाषण देता है। अतः बिशनदास के स्वार्थी प्रवृत्ति के कारण गाँव के चौधरी तथा चमार लोग कटे रहते हैं। डॉ. बिशनदास पर से सभी का विश्वास उड़ जाता है। अवसरवादी नेता के रूप में डॉ. बिशनदास का चित्रण प्रस्तुत उपन्यास में हुआ है। समाज के डर से डॉ. बिशनदास के कथनी और करनी में फर्क दिखाई देता है।

2.2.16 काली-ज्ञानों का प्रेम -

काली और ज्ञानों की प्रेम की त्रासदी 'धरती धन न अपना' उपन्यास की महत्त्वपूर्ण घटना है। आधुनिक काल में प्रेम करना पाप माना जाता है। कोई युवक-युवती प्रेम करते हैं तो समाज द्वारा कड़ा विरोध होता है। सामाजिक प्रतिष्ठा एवं भय से माँ-बाप अपने बेटे तथा बेटी को जहर देने के लिए भी आगे-पीछे नहीं देखते। समाज का प्रेम के प्रति यथार्थ दृष्टिकोण लेखक जगदीशचंद्र ने काली-ज्ञानों के त्रासद प्रेम कहानी से अंकित किया है।

काली शहर से गाँव वापस आने पर पहली बार उसने ज्ञानों को जीतू के घर में देखा था। तभी उसके मन में ज्ञानों के प्रति आकर्षण निर्माण हुआ। ज्ञानों भी काली को देखकर रीझ जाती है। धीरे-धीरे दोनों एक-दूसरे को चाहने लगते हैं। ज्ञानों मंगू चमार की

---

1. जगदीशचंद्र - धरती धन न अपना, पृष्ठ - 109

बहन है। वह निड़र एवं आत्मविश्वासी है। ज्ञानों हर मुश्किल में काली का साथ देती है। वह अपने भाई मंगू के खिलाफ खड़ी हो जाती है। वह पंचायत के सामने अपने भाई मंगू के विरोध में गवाही देती है। काली और ज्ञानों की चर्चा पूरे गाँव में फैल जाती है। मंगू को यह जब पता चलता है तो वह घर आकर ज्ञानों को पीटता रहता है। पीटाई होने के बाद भी दोनों एक-दूसरे से मिलते रहते हैं। ज्ञानों ने अपना पूर्ण समर्पण काली के प्रति किया था।

गाँव के लोग ज्ञानों को 'काली की मोरनी' कहकर चिढ़ाते हैं, फिर भी वह काली से मिलती रहती है। लेखक जगदीशचंद्र ने काली और ज्ञानों की प्रेम कहानी का वर्णन इस प्रकार किया है- ''मक्की और बाजरे की फसल बढ़ने के साथ-साथ ज्ञानों और काली के प्रेम के चर्चे भी फैलते गए। फसल की नलाई के दौरान घास निकाल दिया जाता ताकि उसे कोई हानि न पहुँचे। घास-फूस फिर उग आता तो दोबारा नलाई कर दी जाती। ज्ञानों और काली के प्रेम की कहानियाँ फैलने लगती तो ज्ञानों की मार-पीट और फटकार से उन्हें कम करने का यत्न किया जाता। दोनों की मुलाकातें बंद हो जाती लेकिन कुछ ही दिनों के बाद यह सिलसिला फिर शुरू हो जाता।''[1] अतः कहा जा सकता है कि काली-ज्ञानों प्रेम में इतने दिवाने हो जाते हैं कि उन्हें लोकलाज का भय तक नहीं रहता। एक बार ज्ञानों के घर में काली के जाने से मुहल्ले में शोर मच जाता है। मुहल्ले का बुजुर्ग काली से ज्ञानों को बहन कहने को कहता है, परंतु काली इसे इन्कार करता है।

ज्ञानों काली के बच्चे की माँ बननेवाली होती है। ज्ञानों इस बारे में काली को बताती है। काली ने इसकी कल्पना भी नहीं की थी। फिर भी काली ज्ञानों के साथ शादी करना चाहता है। इसके लिए वह पादरी से ईसाई धर्म स्विकारना चाहता है। पादरी ज्ञानों को नाबालिग कहकर धर्म-परिवर्तन पर रोक लगाता है। काली-ज्ञानों दोनों एक ही गोत्र के होने के कारण शादी भी नहीं की जा सकती है। ज्ञानों की माँ बहुत दुःखी हो जाती है। वह ज्ञानों का बच्चा गिराने का हर प्रकार से यत्न करती है, परंतु वह निराश ही होती है। मंगू तो अपनी बहन की पीटाई करता है। लोकलाजवश मंगू और ज्ञानों की माँ जस्सो दोनों ज्ञानों को जहर देने का फैसला लेते हैं। अंत में ज्ञानों को जहर देकर मार दिया जाता है। ज्ञानों की मृत्यु का

---

1. जगदीशचंद्र - धरती धन न अपना, पृष्ठ - 265

गाँव में किसी को भी दुःख नहीं होता। जस्सो की रोने की आवाज सुनकर गाँव के लोग समझ जाते हैं कि ''ज्ञानों को जहर देकर मारा गया है लेकिन किसी ने यह बात अपने होठों पर नहीं आने दी। ज्ञानों की मौत का कारण न तो किसी ने पूछा और न ही किसी ने बताया।''[1] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि समाज के लोग पुरानी परंपरा, प्रथाएँ एवं रूढ़ियों से चिपके हुए हैं। ''सुर्योदय के थोड़ी देर बाद ही ज्ञानों की अर्थी श्मशान भूमि पहुँचा दी गई। कोई रीति-रिवाज नहीं किए गए लेकिन मुहल्ले के हर व्यक्ति ने उसकी अर्थी को कंधा दिया ताकि वह चुड़ैल बनने के बाद उन्हें परेशान और तंग न करे।''[2] स्पष्ट है कि अज्ञानी एवं अंधविश्वास में लिप्त दलित समाज अपनी पुरानी मानसिकता को संजोए रखना चाहता है। जिसके कारण उनकी प्रगति-विकास में बाधाएँ निर्माण होती हैं। अतः कहा जा सकता है कि काली और ज्ञानों की प्रेम-कहानी प्रस्तुत उपन्यास की त्रासदी है।

2.2.17 पुनः काली का गाँव छोड़ना -

ज्ञानों की मृत्यु की खबर सुनते ही काली गाँव से चला जाता है। काली गाँव छोड़कर कहाँ गया इसकी किसी को कोई खबर नहीं है। ज्ञानों की चिता को आग लगाने पर सब ने देखा कि काली के घर पर ताला पड़ा हुआ है। काली के एकाएक गाँव से चले जाने पर काफी अफवायें गाँव में फैलाई गई। कुछ लोगों को कहना था कि ''सुर्यास्त के समय ज्ञानों की चिता के पास बैठे देखा था। वह उसकी गर्म राख पर झुका हुआ था और जब वे उसकी ओर बढ़े तो वह खड़ी फसल में छिप गया और फिर उसका कुछ पता नहीं चला।''[3] कोई कहता कि काली ने रेल की पटरी पर आत्महत्या की, परंतु कोई नहीं जान पाया कि काली कहाँ चला गया।

समय गुजरते ही सभी लोग काली और ज्ञानों को भूल गए थे। एक दिन मंगू चमार काली के मकान का ताला तोड़कर मकान हथिया लेता है। इस प्रकार 'धरती धन न अपना' उपन्यास का अंत काली के गाँव छोड़ने से होता है। दलित युवक काली के जीवन की त्रासदी प्रस्तुत उपन्यास में अंकित की गई है।

---

1. जगदीशचंद्र - धरती धन न अपना, पृष्ठ - 283
2. वही, पृष्ठ - 283
3. वही, पृष्ठ - 283

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि लेखक जगदीशचंद्र ने 'धरती धन न अपना' उपन्यास की कथावस्तु औपन्यासिक प्रविधि के तत्वों को ध्यान में रखते हुए विवेचित की है। दलित समाज के सामाजिक यथार्थ का अंकन बखूबी से प्रस्तुत उपन्यास में हुआ है।

2.3 'धरती धन न अपना' उपन्यास का मूल्यांकन -

सन् 1972 में प्रकाशित 'धरती धन न अपना' उपन्यास में लेखक जगदीशचंद्र ने स्वाधीनता-पूर्व पंजाब की ग्रामीण पृष्ठभूमि में गहरी संवेदना एवं तटस्थता के साथ दलित जीवन की कथा प्रस्तुत की है। लेखक जगदीशचंद्र स्वयं उच्चवर्गीय होने के बावजूद भी बचपन में उन्होने अपने आस-पास देखा, उसी अनुभूति को प्रस्तुत उपन्यास में अंकित किया है। पात्रों के साथ संवेदनशीलता रखते हुए चरित्र-चित्रण किया गया है।

प्राचीन काल से चली आ रही शोषक-शोषित पद्धति को समाज के सामने उद्घाटित करने का प्रयास 'धरती धन न अपना' उपन्यास में हुआ है। आपसी द्वेष, पारस्पारिक फूट और आंतरिक विघटन के कारण दलितों की स्थिति अत्यंत दयनीय है। प्रस्तुत उपन्यास का दलित पात्र काली विद्रोही युवक है। उच्चवर्गीय समाज द्वारा दलितों पर हो रहे अन्याय-अत्याचार को सहन नहीं कर पाता। वह उच्चवर्गीय समाज के खिलाफ बगावत करता है। चौधरियों को काली कहता है- ''मैं बिना पैसों के काम नहीं करूँगा। मैं किसी के पास गिरवी नहीं पड़ा हूँ जो बेगार करूँ।''[1] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि दलित समाज उच्चवर्गीयों के रोब तले दबा हुआ जीवन-यापन करता है। परंतु काली निड़र होकर उच्चवर्गीय मानसिकता को नकारता है।

मंगू चमार जैसे पात्र चौधरियों का चापलूसी करने में ही अपने जीवन की सार्थकता समझते हैं। अपने बिरादरी तथा माँ-बहनों की इज्जत पर आँच आते देख विरोध नहीं प्रकट करता। बल्कि हरदेव चौधरी को दलित युवती लक्षो की इज्जत लूटने के लिए मंगू ही उकसाता है। इस काम में उसे कोई शर्म महसूस नहीं होती। एक-दूसरे की चापलूसी कर दंगा-फसाद करने में मंगू को आनंद मिलता है। न ही उसे बड़ों का लिहाज है और न ही अपने समाज पर गर्व। बेगारी उठाने में ही मंगू को अच्छा लगता है। व्यक्तिगत स्वार्थी प्रवृत्ति के कारण मंगू चमार जैसे दलित युवक बहके हुए नजर आते हैं।

---

1. जगदीशचंद्र - धरती धन न अपना, पृष्ठ - 236

चौधरी हरनामसिंह, छज्जू शाह, मुंशी चौधरी जैसे पात्र दलित लोगों के अज्ञान एवं अंधविश्वास का लाभ उठाकर लूटते रहते हैं। हरनामसिंह चौधरी दलितों में अपनी दहशत फैलाता है। छज्जूशाह साहूकारी करते हैं। गरीब एवं मजदूर दलितों को कर्ज देकर ब्याज पर ब्याज लेना, कर्जा न चुकाने पर दलितों को जमीन से बेदखल करना आदि के कारण दलित समाज सदियों से दबा हुआ है। मुंशी चौधरी तो भ्रष्टाचार से पैसे कमाना चाहता है। जातिवादी घृणा समाज में इतनी जड़ जमा चुकी है जिससे दलित लोगों को निरंतर पीड़ाएँ झेलनी पड़ती हैं। मुंशी चौधरी काली के मनीआर्डर से पैसे हड़प लेता है और डाँटते हुए कहता है- ''मैं भिखारी नहीं हूँ जो तेरे से भीख लूँ। अगर मुझे हाथ फैलाना होगा, तो किसी महाजन या चौधरी के आगे फैलाऊँगा, चमार के दर पर नहीं जाऊँगा।''[1] उक्त कथन से समाज में फैली जातिवादी घृणा स्पष्ट होती है। समाज की इस व्यवस्था से तंग आकर काली जैसे युवक रोजगार की अपेक्षा नगरों-महानगरों की ओर जा रहे हैं।

हिंदू धर्म में फैले पाखंड के कारण आम आदमी का धर्म पर से विश्वास ही उड़ गया। पंडित संतराम जैसे धर्म के ठेकेदार छुआछूत प्रथा का पालन करते नजर आ रहे हैं। दलितों को मंदिर प्रवेश निषिद्ध तथा सार्वजनिक कूएँ पर पानी भरना भी वर्ज्य माना गया है। कर्मकांड एवं बाह्याडंबर के फैल जाने से हिंदू धर्म अपने मूल रूप से हट गया है। नन्दसिंह चमार अपने धर्म से परेशान होकर ईसाई धर्म में परिवर्तन करता है। परंतु धर्म-परिवर्तन से नन्दसिंह की समस्याएँ दूर नहीं होती हैं। लेखक जगदीशचंद्र ने धर्म-परिवर्तन की समस्या को समाज के सामने लाया है। डॉ. बाबासाहब आंबेडकर जी ने धर्म-परिवर्तन से दलितों को उनके अधिकार प्राप्त करा दिए। उनके पश्चात् धर्म-परिवर्तित दलित समाज की स्थिति में कोई भी परिवर्तन नहीं हुआ है। जाति-धर्म में हो रहे भेदा-भेद से दलित समाज अन्य वर्गों से पिछड़ चुका है।

लेखक जगदीशचंद्र ने 'धरती धन न अपना' उपन्यास में मार्क्सवादी विचारों का अंकन किया है। डॉ. बिशनदास यह पात्र मार्क्सवादी विचारों से प्रेरित हैं। शोषक-शोषित संघर्ष एवं वर्ग-संघर्ष पर मार्क्स विश्वास रखता है। वर्ग-संघर्ष के संदर्भ में

---

1. जगदीशचंद्र - धरती धन न अपना, पृष्ठ - 144

डॉ. बिशनदास कहता है- ''जिस तरह बड़ी मछली छोटी मछली को खाती है उसी तरह बड़ा तबका छोटे तबके को एक्सपलायट करता है। यानी उसकी मेहनत का फल उसे नहीं खाने देता बल्कि खुद खा जाता है। इसी से क्लास स्ट्रगल (वर्ग-संघर्ष) पैदा होता है। लेकिन मार्क्सवादी इन्कलाब से यह तबका खत्म हो जाएगा और प्रोलतारिया का बोलबाला होगा।''[1] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि पूँजीपति और जमींदार सदा से दलितों को शोषण करते आए हैं। डॉ. बिशनदास के माध्यम से ऐसा लगता है कि लेखक जगदीशचंद्र मार्क्सवादी व्यवस्था पर विश्वास रखते हैं, परंतु चौधरी और चमारों के बायकाट के समय मार्क्स के विचारों का प्रतीक डॉ. बिशनदास कोई सहायता नहीं करता। अतः यहाँ पर लेखक ने स्पष्ट किया है कि मार्क्सवादी व्यवस्था में भी त्रूटियाँ हैं। बायकाट के समय काली दलितों का नेतृत्व करता है। दलित लोगों में चेतना जगाने का प्रयास काली करता है। दलित समाज का विद्रोह अपनी माँग पूरी करके लेता है। संगठन के आगे पूँजीपति वर्ग की हार हो जाती है।

दलित पुरुषों के साथ-साथ दलित स्त्रियों का भी उच्चवर्गीयों द्वारा शोषण होता आया है। उच्चवर्गीय लोग दलित स्त्रियों को अपनी संपत्तिमात्र समझते हैं। लक्षो, प्रीतो, पाशो जैसी दलित स्त्रियाँ आर्थिक अभाव एवं असहायता के कारण शोषण की पीड़ाएँ झेल रही हैं। अवैध यौन-संबंध के कारण अवैध संतान की समस्याएँ समाज के सामने खड़ी हैं। ज्ञानों दलित स्त्री पात्र है जो निड़र एवं आत्मविश्वासी है। वह अन्याय-अत्याचार के विरोध में आवाज उठाती है। दलित स्त्रियाँ चौधरी, जमींदारों की हवेलियों में छोटे-मोटे काम करते हुए अपने तथा अपने परिवार का पेट पालती हैं। दलित स्त्रियाँ सदियों से अपने ऊपर हो रहा अन्याय-अत्याचार सहती आयी हैं।

ज्ञानों और काली की प्रेम-कहानी प्रस्तुत उपन्यास की त्रासदी है। आजकल प्रेम के संदर्भ में ढिंढोरा पीटा जा रहा है। फिर भी समाज में लोगों की पुरानी मानसिकता नहीं बदली है। लोगों की पुरानी मानसिकता की बलि ज्ञानों और काली की प्रेम-कहानी है। दोनों एक-दूसरे को जी जान से चाहते हुए भी समान गोत्र के कारण शादी नहीं कर पाते। लोकलाजवश ज्ञानो के कुँवारी माता होने पर माँ तथा भाई मंगू द्वारा ज्ञानों को जहर दिया

---

1. जगदीशचंद्र - धरती धन न अपना, पृष्ठ - 144

15892

जाना कायरता है। ज्ञानों की मृत्यु के पश्चात् काली का भी जीवन नष्ट हो जाता है। काली विक्षिप्त-सी अवस्था में गाँव छोड़कर चला जाता है। प्रस्तुत उपन्यास का प्रारंभ काली के गाँव पुनरागमन से होता है तो अंत काली के गाँव छोड़ने से होता है।

लेखक जगदीशचंद्र ने विभिन्न पात्रों का चरित्र-चित्रण तत्कालिन परिवेश के अनुसार अंकित किया है। भाषा-शैली की दृष्टि से भी 'धरती धन न अपना' उपन्यास सफल माना जाता है। उपन्यास की कथावस्तु का घटनास्थल पंजाब प्रांत रहा है। अतः संवादों में विभिन्न पंजाबी शब्दों के साथ-साथ पंजाबी भाषा के वाक्यों का भी प्रयोग हुआ है। मुहावरे, कहावतें, सुक्तियाँ आदि का प्रयोग यथावत हुआ है। विभिन्न शैलियों का प्रयोग भी प्रस्तुत उपन्यास में हुआ है। भाषा-शैली के संदर्भ में अध्ययन पाँचवें अध्याय में विस्तार से किया गया है।

अतः कहना सही होगा कि 'धरती धन न अपना' उपन्यास में लेखक जगदीशचंद्र ने अपने अंतस की पीड़ा को अत्यंत मार्मिकता से प्रस्तुत किया है। दलित समाज के यथार्थ का यथातथ्य अंकन करने में लेखक जगदीशचंद्र को काफी सफलता मिली है। एक गैरदलित लेखक होते हुए भी अनुभूति की अभिव्यक्ति का पक्ष 'धरती धन न अपना' उपन्यास में दिखाई देता है। प्रस्तुत उपन्यास दलित समाज का लेखा-जोखा प्रस्तुत करता है। काली, प्रतापी-चाची, जस्सो, ज्ञानो, प्रीतो, लक्षो, बाब फत्तू, जीतू, मंगू, छज्जू शाह, घड्डम चौधरी, चौधरी हरनामसिंह, डॉ. बिशनदास, लालू पहलवान आदि पात्र पंजाब का ही नहीं वरन संपूर्ण भारतीय समाज जीवन का प्रतिनिधित्व करते हुए दिखाई देते हैं।

निष्कर्ष -

औपन्यासिक प्रविधि के अनुसार उपन्यास में कथावस्तु महत्त्वपूर्ण मानी जाती है। 'रीढ़ी की हड्डी के समान कथावस्तु अपना कार्य करती है। उपन्यास की यशस्विता उपन्यास के वस्तुपरक विवेचन पर निर्भर होती है। कथावस्तु में संगठन, रोचकता, मौलिकता का होना आवश्यक है। विशिष्ठ भाषा-शैली के प्रयोग से कथावस्तु में रोचकता निर्माण की जा सकती है।

'धरती धन न अपना' उपन्यास में लेखक जगदीशचंद्र ने पंजाब प्रांत के घोड़ेवाहा नामक ग्राम को आधार बनाया है। घोड़ेवाहा गाँव के पूँजीपति वर्ग और दलित समाज इन दो वर्गों के बीच के माहौल का यथार्थ अंकन प्रस्तुत उपन्यास में हुआ है। प्रमुख पात्र के रूप में काली दलित समाज को संगठित करने का प्रयास करता है। प्रस्तुत उपन्यास की कथावस्तु काली के पक्का मकान बनाने के ईर्द-गीर्द घूमती रहती है। सदियों से चौधरी, जमींदारों के रोब तले दबा-कुचला दलित समाज अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करता है। जाति-भेद, छुआ-छूत प्रथा जैसी अनिष्ठ प्रथाओं से उच्चवर्ग दलितों का शोषण करते रहते हैं। धर्म का आधार लेकर दिन-दहाड़े दलित, मजदूरों को लूटा जाता है। आपसी द्वेष एवं स्वार्थी प्रवृत्ति के कारण दलित समाज अन्य वर्गों से पिछड़ा हुआ है। लेखक जगदीशचंद्र ने दलित स्त्रियों की वास्तविक स्थिति पर भी प्रकाश डाला है। पुरुषों की अपेक्षा दलित स्त्रियाँ सदा ही शोषित रही हैं। स्त्रियों को विभिन्न सामाजिक बंधन, रीति-रिवाजों का कड़ाई से पालन करना पड़ता है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि 'धरती धन न अपना' उपन्यास की कथावस्तु औपन्यासिक प्रविधि के अनुसार अंकित हुई है। दलित समाज के यथार्थ को आधार बनाकर लेखक जगदीशचंद्र ने प्रस्तुत उपन्यास का ताना-बाना बुना है। निश्चित ही 'धरती धन न अपना' यह कृति सर्वश्रेष्ठ रही है। उपन्यास की कथावस्तु पर लेखक का अपना अलग योगदान विशिष्ठ झाँकी दिखाई देती है।